International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 08-11-2025, Accepted: 07-12-2025, Published: 22-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 69-70

हिन्दी कहानी में नई कहानी आन्दोलन का उद्भव और विकास

प्रभात मिश्रा
शोध छात्र, हिन्दी विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी कहानी की कथा–भूमि अत्यंत विस्तृत और समृद्ध रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल में नई कहानी आन्दोलन ने एक ऐसी क्रांति का सूत्रपात किया जिसने कहानी के स्वरूप, शिल्प और कथ्य को मूलभूत रूप से परिवर्तित कर दिया। यह आन्दोलन यथार्थ के नए मोड़ और मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने में सफल रहा। यदि इसी प्रकार कहानी की यह धारा विकसित होती रही तो निश्चित रूप से हम हिन्दी कहानी को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर एक विशिष्ट पहचान दिलाने में सक्षम होंगे।

मूल शब्दः हिन्दी कहानी, नई कहानी, आन्दोलन, यथार्थवाद, मनोविश्लेषण, मध्यवर्ग

प्रस्तावना
नई कहानी का शाब्दिक अर्थ है– 'नई' अर्थात समकालीन और प्रगतिशील दृष्टि से युक्त कहानी। यह आन्दोलन 1950 के दशक में प्रारम्भ हुआ और इसने प्रेमचंद की परंपरागत यथार्थवादी कहानी से अलग हटकर एक नवीन मार्ग का अन्वेषण किया। नई कहानी ने बाह्य घटनाओं के स्थान पर आंतरिक मानसिक संघर्षों, दांपत्य जीवन की जटिलताओं और नगरीय मध्यवर्ग के अकेलेपन को अपना मुख्य विषय बनाया। अंग्रेजी में इसके लिए 'The New Story' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

डॉ. नामवर सिंह ने नई कहानी के संदर्भ में कहा है, "नई कहानी यथार्थ की नई परतों का उद्घाटन करती है। यह केवल समस्या–केन्द्रित कहानी नहीं, बल्कि मनुष्य की आंतरिक त्रासदी और उसके अस्तित्व की खोज की कहानी है।"

सिंह जी का यह कथन इस बात को प्रमाणित करता है कि नई कहानीकारों ने सामाजिक सरोकारों के साथ–साथ व्यक्ति के निजी संसार को भी उतनी ही गम्भीरता से देखा–परखा।

हिन्दी कहानी के विकासक्रम में नई कहानी आन्दोलन का विशेष स्थान है। इस आन्दोलन के उद्भव और विकास को हम मोटे तौर पर तीन चरणों में विभाजित कर सकते हैं–

1. नई कहानी का प्रारम्भिक चरण (1950–1957)
2. नई कहानी का स्वर्णिम चरण (1957–1965)
3. नई कहानी का उत्तर चरण (1965 के बाद)

1. नई कहानी का प्रारम्भिक चरण
इस चरण में कमलेश्वर, मोहन राकेश, और राजेंद्र यादव जैसे रचनाकारों ने नई कहानी की नींव रखी। इनकी कहानियाँ प्रेमचंद के ग्रामीण यथार्थ से हटकर शहरी जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती थीं। मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक' और कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया' जैसी कहानियों ने मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों और अस्तित्ववादी चिंताओं को नए शिल्प के साथ प्रस्तुत किया। इस चरण की कहानियों पर अंग्रेजी और रूसी कहानीकारों, विशेषकर चेखव का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

2. नई कहानी का स्वर्णिम चरण
यह नई कहानी आन्दोलन का सबसे प्रभावशाली दौर था। इसी दौरान नामवर सिंह द्वारा संपादित 'नई कहानी : नए प्रश्न' जैसे ग्रंथों के माध्यम से इस आन्दोलन का सैद्धांतिक आधार मजबूत हुआ। इस चरण में कहानी का कलेवर बदला और शिल्प में नवीन प्रयोग हुए। भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', कृष्णा सोबती की 'डार से बिछुड़ी', और राजेंद्र यादव की 'प्रतिनिधि कहानियाँ' इसी दौर की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। इन कहानियों में मनोविश्लेषणात्मक गहराई और यथार्थ के नए आयाम देखने को मिलते हैं। इस चरण में नारी–पात्रों को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानियों ने स्त्री–जीवन के द्वंद्वों को बखूबी उकेरा।

3. नई कहानी का उत्तर चरण
1965 के बाद नई कहानी आन्दोलन का प्रभाव कुछ कम होने लगा और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा प्रवर्तित 'प्रयोगवाद' और बाद में 'अकहानी' जैसी धाराओं ने जन्म लिया। फिर भी, नई कहानी के मूल्यांकन और उसकी विरासत पर चर्चा जारी रही। इस चरण के रचनाकारों ने राजनीतिक–सामाजिक परिदृश्य के बदलावों को अपनी कहानियों का विषय बनाया। उदय प्रकाश की कहानियाँ इसी परंपरा की अगली कड़ी कही जा सकती हैं।

नई कहानी आन्दोलन ने हिन्दी साहित्य को अनेक श्रेष्ठ रचनाकार दिए। मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' जैसी मर्मस्पर्शी कहानी लिखकर दांपत्य जीवन के टूटन को अभिव्यक्त किया। शिवानी ने अपनी कहानियों में स्त्री–मन के भावबोध को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया। निर्मल वर्मा ने पश्चिमी सभ्यता से उत्पन्न अलगाव और अकेलेपन की सूक्ष्म अनुभूतियों को अपनी कहानियों का विषय बनाया। उनकी कहानी 'परिंदे' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

नई कहानी के तकनीकी पक्ष पर विचार करें तो इसने कहानी के शिल्प में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। आंतरिक एकालाप, प्रतीकात्मकता, भाषा की संवेदनशीलता और यथार्थ के बहुआयामी चित्रण ने हिन्दी कहानी को एक नया सौंदर्यबोध प्रदान किया। इस आन्दोलन ने यह सिद्ध किया कि साहित्य केवल विचार का माध्यम नहीं, बल्कि जीवनानुभूति की सूक्ष्म अभिव्यक्ति भी है।

निष्कर्ष
हिन्दी कहानी के इतिहास में नई कहानी आन्दोलन एक मील का पत्थर साबित हुआ। इसने न केवल हिन्दी कहानी के कथ्य और शिल्प को समृद्ध किया, बल्कि आगे आने वाली कहानी की पीढ़ियों के लिए एक ऐसा मानदंड स्थापित किया, जिसके आलोक में आज भी कहानी का मूल्यांकन किया जाता है। इसकी कथा–भूमि ने हिन्दी साहित्य को नए आयाम दिए और लेखकों को एक नई दृष्टि प्रदान की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, नामवर. (1966). नई कहानी: नए प्रश्न. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. राकेश, मोहन. (2005). मोहन राकेश की श्रेष्ठ कहानियाँ. नई दिल्ली: राजपाल एंड सन्स।
3. यादव, राजेंद्र. (1998). नई कहानी की भूमिका. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
4. भंडारी, मन्नू. (2000). एक प्लेट सैलाब. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
5. वर्मा, निर्मल. (1975). कहानी: स्वयं और समय. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।